जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 60

हंस

नवंबर 2023

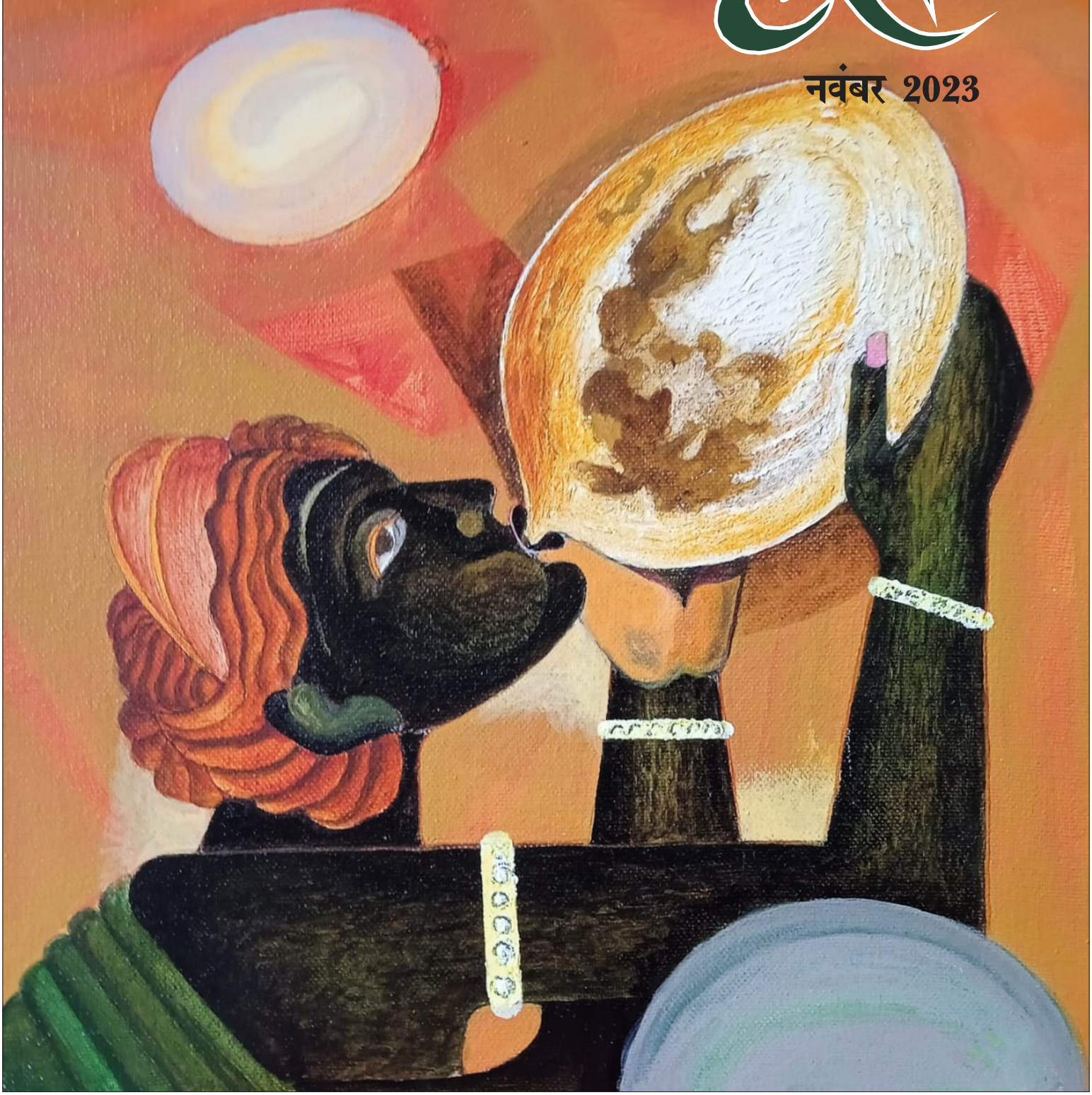

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान(अवैतनिक)
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोज़न एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
सोशल मीडिया
रिया खरक्वाल
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
•
रेखाचित्र
सिद्धेश्वर, शैलेंद्र सरस्वती, आस्था

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट :www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 60 रुपए प्रति
वार्षिक : 700 रुपए (व्यक्तिगत)
रजिस्टर्ड : 1100 रुपए
संस्था/पुस्तकालय : 900 रुपए (संस्थागत)
रजिस्टर्ड : 1300 रुपए
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

नवंबर, 2023

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-445 वर्ष : 38 अंक : 4 नवंबर 2023

आवरण : नरेन्द्र नागदेव

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

इस अंक में

संपादकीय
4. गाज़ा पट्टी के गिद्ध : संजय सहाय

अपना मोर्चा
7. पत्र

मुड़-मुड़ के देख
12. अधूरी चिट्ठी : सत्येन कुमार (हंस अक्तूबर 1986)

आने वाले दिनों के सफ़ीरों के नाम
18. आलोचक इसलिए मौन हैं क्योंकि मैं ब्राह्मण नहीं हूं... : (संजीव से रविशंकर सिंह का संवाद)

कहानियां
28. मन के तहखाने : वंदना शुक्ल
34. एडम : प्रकृति करगेती
40. राकिया की अम्मा : समीना खान
48. उल्टा ज़माना : फ़रज़ाना महदी
64. अनार : कावाबाता यासुनारी (जापानी कहानी) (अनुवाद : अनुश्री)

कविता
56. अनुराग अन्वेषी, शचीन्द्र आर्य, केशव शरण
57. दीपाली अग्रवाल, संध्या सिंह

यात्रा-वृत्त
58. लंदन में आखिरी दिन और डिकेंस से मिलने की जिद : मनीषा कुलश्रेष्ठ

आराम नगर
66. ओएमजी-2 : यौन-शिक्षा के पक्ष में कारगर जिरह: सत्यदेव त्रिपाठी

ग़ज़ल
85. सिराज फ़ैजल ख़ान
95. ऋचा सिन्हा
98. मनीष बादल

लघुकथा
76. राघवेन्द्र प्रपन्न
89. प्रहलाद श्रीमाली

परख
71. अंतर्कथाओं का सत्य और स्त्री-स्वप्न की बुनावट : सुप्रिया पाठक
74. पूर्व की व्यापक पहचान का आग्रह : राकेश मिश्रा
77. स्त्री मन का माइक्रोस्कोपिक अन्वेषण : नीरज नीर
80. एक अंतर्यात्रा–स्थूल से सूक्ष्म की ओर : सुमित्रा महरौल
82. स्त्री-मुक्ति का जलसा दूर है अभी : किंशुक गुप्ता
86. पश्चिमी धारणाओं के बंदीगृह से बाहर मीरां : मलय पानेरी

शब्दवेधी/शब्दभेदी
90. पत्नी संभोग के लिए राजी नहीं? उसे मार डालो : तसलीमा नसरीन

सृजन-परिक्रमा
92. विनाश और पुनर्निर्माण : रश्मि रावत

रेतघड़ी
96-98

गाज़ा पट्टी के गिद्ध

यहूदियों का प्राचीन इतिहास जो मूलतः मिथक ही है, मुख्य रूप से हिब्रू बाइबल पर आधारित है, जिसके अस्तित्व में आने का समय हजार वर्ष ईसापूर्व अनुमानित किया जाता है. अधिकारिक हिब्रू बाइबल जिसका उपयोग रब्बिनिक जूडाइज्म में होता है, का रचनाकाल 7वीं-10वीं ईस्वी माना जाता है.

यहूदी समुदाय की मान्यता के अनुसार हिब्रू बाइबल में चर्चित दूसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व (विवादित) में जन्मे नूह के खानदान के अब्राहम को पहला यहूदी माना जाता है, और उनके पुत्र आइज़क और पौत्र जैकब को अपने राष्ट्र के कुलपतियों की तरह आदर दिया जाता है. यों ये सारी मान्यताएं महज मान्यताएं हैं जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है. एक अन्य विवादित हिब्रू मान्यता के अनुसार यहूदी जाति समूह मेसोपोटामिया से आकर कनान की भूमि (बाद का दक्षिणी लेवांत) में बस गया था जहां उनकी तरह के ही सेमेटिक जाति वाले समूह पहले से रहा करते थे, जिनमें अक्काडियन, इथियोपियन, फिलिस्तीनी, अरब सब शामिल थे. इस क्षेत्र में अपनी अलग पहचान के साथ यहूदी संस्कृति का विकास हुआ. 10वीं शताब्दी ईसापूर्व के आसपास यहूदी राजा सोल ने बिखरे भिन्न यहूदी समूहों को संगठित किया जिसके फलस्वरूप इस क्षेत्र में दो राज्यों-उत्तर में इजराइल और दक्षिण में जूडा का उदय हुआ. राजा सोल के नक्शे-कदम पर चलते हुए उनके दामाद डेविड और फिर उनके पुत्र सौलोमन ने इस क्षेत्र पर शासन किया. 970 ईसापूर्व में सौलोमन ने प्रथम यहूदी मंदिर का निर्माण कराया जिसमें प्रमुख ईश्वर यहोवा, विधाता एल और देवी अशेराह के साथ-साथ एक आयातित ईश्वर बाल की भी उपासना होती थी. इजराइल और जूडा राज्यों के उत्कर्ष के समय कनान का एक बड़ा भू-भाग इन राज्यों के नियंत्रण में था. दिलचस्प तथ्य यह है कि कनान का गाज़ा सहित दक्षिणी तटीय हिस्सा इन यहूदी राज्यों के गठन के भी बहुत पहले से फिलिस्तीन के नाम से अस्तित्व में था और जहां उस जाति विशेष के लोग रहा करते थे. समय के साथ-साथ इजराइल और फिर जूडा का अस्तित्व भी समाप्त हो गया.

अब हम आंशिक रूप से उपलब्ध साक्ष्य आधारित इतिहास की बात करते हैं. नव-बेबीलोनियन सम्राट और विश्व विख्यात बेबीलोन के 'हैंगिंग गार्डन' के निर्माता नेबुकडनेजार ने 587 ईसापूर्व में बचे-खुचे जूडा राज्य पर चढ़ाई कर दी, सौलोमन के प्रथम मंदिर को नेस्तनाबूद करते हुए यहूदियों को अपने कब्जे में ले लिया. 562 ईसापूर्व में नेबुकडनेजार की मृत्यु हो गई. उसके बाद नव-बेबीलोनियन साम्राज्य कमजोर पड़ने लगा. 539 ईसापूर्व में आख़ेमेनिड साम्राज्य (जिसका क्षेत्र बाल्कन देशों, मिस्र और सेंट्रल एशिया से लेकर गांधार और तक्षशिला तक फैला हुआ था, और दुर्भाग्य से जिसके बारे में हम बहुत कम जानते हैं और न जाने क्यों जानना भी नहीं चाहते) के सायरस महान ने नव-बेबीलोन से यहूदियों को न केवल मुक्त कराया, बल्कि उनके पुरखे डेविड द्वारा निर्मित शहर ज़ायन वापसी का तोहफे सरीखा फरमान भी जारी कर दिया. यह स्थानांतरण अगले 100 वर्ष तक चलता रहा. ज़ायन सहित जूडा आख़ेमेनिड साम्राज्य का हिस्सा रहते हुए भी एक स्वायत्त प्रॉविंस बना रहा. इस दौरान यहूदी संस्कृति का खासा विकास हुआ. उन्होंने ध्वंस कर दिए गए मंदिर का पुनर्निर्माण कराया जिसे द्वितीय मंदिर काल की शुरुआत माना जाता है. आख़ेमेनिडों के इस उपकार को यहूदी कौम इनके इस्लाम कबूलने के बाद भूल गई थी या पहले ही, यह शोध का विषय है.

बहरहाल, 63 ईसापूर्व में रोमन साम्राज्य के अंतर्गत जनरल नियस पॉम्पियस मैग्नस (पॉम्पी महान) द्वारा जेरूसलम पर कब्जा कर लिए जाने के उपरांत यहूदी इस क्षेत्र से उखड़कर यूरोप भर में तितर-बितर होने लगे. कुछ एशियाई हिस्सों में भी जा बसे. स्वभाव से मेहनती, व्यापार में कुशल, संगीत व विज्ञान में अत्यंत मेधावी किंतु परंपरा से चिपके हुए लकीर के फ़क़ीर, और सामाजिक दायित्व बोध से रिक्त यहूदी यूरोपीय समाज में नफरत का पात्र बनते चले गए. उनकी वेशभूषा, उनकी रूढ़ियां, खान-पान को लेकर उनके आग्रह, उनका धनी होना और उनकी हृदयहीनता उन्हें हमेशा दूसरों की नजरों में घृणा और ईर्ष्या का पात्र बनाती रही. यहूदी महाजनों को उनकी निरंकुश सूदखोरी के कारण भी यूरोपीय समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता रहा.

''...सब कुछ मछली को फंसाने के लिए, इससे किसी को भी लाभ हो न हो, मेरी इंतकाम की भूख जरूर मिट जाएगी. उसने लाखों बार मेरा अपमान किया है, मेरी राह में रोड़े अटकाए हैं, मेरे नुकसान पर उसने ठहाके लगाए हैं, मेरे लाभ पर उसने उपहास उड़ाया है, मेरी जाति का तिरस्कार किया है, मेरे सौदों में बाधा डाली है, मेरे दोस्तों से मेरा मन-मुटाव करवाया है, मेरे दुश्मनों को भड़काया है और इन सबका कारण– कि मैं एक यहूदी हूं! क्या यहूदी की आंखें नहीं होतीं, हाथ नहीं होते, अंग-प्रत्यंग नहीं होते, आकार नहीं होता, उसे कुछ महसूस नहीं होता, कोमल भावनाएं नहीं होतीं, भावावेग नहीं होते, क्या वह वैसा ही भोजन नहीं करता, उन्हीं हथियारों से घायल नहीं होता जैसे एक ईसाई होता है? अगर तुम हमें बेधोगे तो क्या हमारा